पिट्स
आर.एन.आई. ३८१३९/८१
www.pits.co.in
वर्ष २९ अंक-४४ सोमवार, २२ जून २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये
इंदौर,मुंबई से एक साथ प्रकाशित

अर्जुन-हंसराज के लिए नई जवाबदारी की तलाश

मनमोहन सिंह सरकार में शामिल न किए गए कद्दावर नेता अर्जुन सिंह, हंसराज भारद्वाज के लिए अब नई जवाबदारी की खोज की जा रही है, दोनों ही नेताओं ने राज्यपाल बनने से साफ इंकार कर दिया है। यह काम इसलिए भी किया जा रहा है क्योंकि कांग्रेस के आला नेताओं को खतरा है कि अगर ज्यादा दिन तक विन्ध्य के ठाकुर को खाली रखा गया तो आने वाले समय में विस्फोट ही विस्फोट होने की संभावनाएं हैं। कहा भी जाता है खाली दिमाग शैतान का घर। पहले अर्जुन सिंह को उत्तर प्रदेश भेजा जा रहा था, पर उनके इंकार के बाद अब यूपी के लिए राहुल गांधी के सलाहकार कनिष्क के पिता एवं राजस्थान के राज्यपाल एस.के.सिंह का नाम आगे चल रहा है। वैसे भी यूपी युवराज के टारगेट में है। शीशराम ओला को मध्य प्रदेश, बलराम जाखड़ को महाराष्ट्र एवं अनिल शास्त्री को राजस्थान का लाट साहब बनाया जा सकता है।

लाल दुर्ग पर लाल हमला

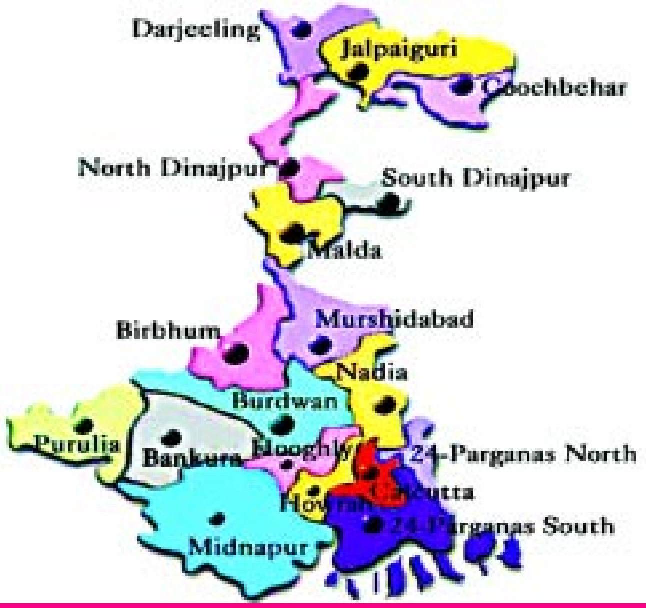

पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने पत्रकार को बताया कि केन्द्रीय गृहमंत्री पी चिदम्बरम ने राज्य में माओवादियों की चुनौतियों से निपटने के लिए और अर्द्धसैनिक बल देने का भरोसा दिलाया है। भट्टाचार्या ने आनन-फानन में बुलाए गए संवाददाता सम्मेलन में बताया कि 241 में से 18 प्रखंडों में कानून व्यवस्था की बहाली के मकसद से माओवादियों से निपटने के लिए केन्द्र सरकार पहले ही केन्द्रीय अर्धसैनिक बलों की 16 कंपनियां भेज चुकी है। उन्होंने बताया कि राज्य के मिदनापुर जिले के लालगढ़ क्षेत्र में लोगों को आतंकित करने के लिए माओवादी इन प्रखंडों में लोगों से पैसे ऐंठ रहे हैं और उनकी अंधाधुंध हत्याएं कर रहे हैं। लालगढ़ में पुलिस थाना स्थापित करने के सवाल पर भट्टाचार्य ने कहा कि यह लोगों की गलतफहमी है। वहां पहले से ही वर्षों से पुलिस थाना है। केवल राज्य पुलिस की एक टुकड़ी केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल के साथ मिदनापुर से वहां पहुंची है। यह पूरा अभियान इस तरह से चलाया जा रहा है, जिससे कि कम से कम खूनखराबा हो।

पश्चिम बंगाल के लालगढ़ और उसके आसपास के इलाके में जो कुछ हो रहा है उसके बारे में यह कहा जा सकता है कि वाम मोर्चा सरकार ने पिछले तीन साल में जो बोया है, उसी को वह काट रही है। नक्सलवादियों ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर माकपा के इस गढ़ पर हमला बोल दिया है और न माकपा के कॉडर, न ही स्थानीय प्रशासन और पुलिस कुछ कर पा रही है. हालांकि अब पैरामिलिट्री फोर्स ने लालगढ़ को चारों तरफ से घेर लिया है और वह खेत-खलिहानों के रास्ते भीतर घुसने की कोशिश कर रही है. लगातार राजनैतिक हस्तक्षेप की वजह से राज्य पुलिस में वह दमखम और कार्य कुशलता नहीं है कि ऐसे हमले का सामना कर पाए और माकपा के स्थानीय नेता और कार्यकर्ता आम जनता के ऐसे आक्रमण से हक्काबक्का रह गए हैं। वाम मोर्चे के नेता ऑपरेशन बर्गा और भूमि सुधारों का गुणगान करते नहीं थकते, लेकिन ऐसा लगता है कि उसके बाद वाम मोर्चे की सरकार ने कुछ नहीं किया। पश्चिम बंगाल के ग्रामीण इलाकों में बेहद गरीबी है और तमाम सरकारी काम वाम पार्टियों के स्थानीय नेताओं को सौंप दिए गए हैं, जो मनमानी और भ्रष्टाचार करते हैं। ऐसे में नक्सलवादियों ने अपनी पैठ बना ली। राज्य सरकार इस डर से उनके खिलाफ कार्रवाई करने से बचती रही कि नंदीग्राम जैसी घटना न हो जाए, और अब स्थिति यह आ गई कि नक्सलवादियों ने वाम मोर्चा और सरकार दोनों की मशीनरी को इस इलाके से खदेड़ दिया। यह भी कोई छिपी बात नहीं है कि तृणमूल कांग्रेस के लोगों का प्रत्यक्ष या प्रच्छन्न समर्थन भी उनके साथ है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि वाम मोर्चा इतने साल तक सशस्त्र कॉडर के सुव्यवस्थित नेटवर्क के सहारे राज करता रहा और वहां शांति इसलिए रही कि पुरजोर विरोध करने वाली कोई ताकत नहीं थी। अब जो गतिरोध की ताकतें खड़ी हो रही हैं, वे वाम मोर्चे के तरीकों से ही उसे जवाब दे रही हैं। खतरा यह है कि यह हिंसा तेज हो सकती है और पश्चिम बंगाल के बाकी हिस्सों में भी फैल सकती है।

दरअसल अपने कार्यकाल में वाम मोर्चे खास कर माकपा ने जिस तरह समूचे प्रशासन को पार्टी कॉडर के हवाले कर दिया था, उसकी वजह से इस वक्त न प्रशासन न पार्टी, प्रशासनिक या राजनैतिक स्तर पर नक्सलवादियों की चुनौती को झेल पा रही है। केंद्रीय बलों के सहारे फिलहाल स्थिति नियंत्रण में भले ही आ जाए, लेकिन बुनियादी दिक्कत एक विकासोन्मुख और तटस्थ प्रशासनिक ढांचे के न होने की है, जब तक वह नहीं बनता, पश्चिम बंगाल में जनता अराजकता और अशांति झेलती रहेगी।

आजाद क्षेत्र

लालगढ़ में हुई हिंसा के बाद माओवादियों ने उसे आजाद क्षेत्र घोषित कर दिया। बंगाल के इस क्षेत्र में कानून व्यवस्था पर सवाल उठे हैं। इस दौरान भी वहां बात अल्पसंख्यक कार्ड व अन्य मुद्दों को लेकर ही ज्यादा हो रही है। तृणमूल कांग्रेस पर सांठगांठ का आरोप भी है। आजाद क्षेत्र की बात केवल लालगढ़ में नहीं हर ओर हो गई है और जोड़-घटाओ कार्यक्रम भी चल रहे हैं। टीम इंडिया भी तो आजाद हो चुकी है हर भावना से और हर जिम्मेदारी से। हर बच्चा, हर बूढ़ा टीवी स्क्रीन पर नजर गड़ा के बैठा था कि धोनी और उसके धुरंदर चौके-छक्कों की बरसात कर दें। ऐसा कोई चमत्कार हो न सका।

✍ उत्तम झंवर

कहीं कमजोर फिल्डिंग इसकी जिम्मेदार कही गई तो कहीं टीम का लगातार खेलते रहना एक कारण के रूप में बोला गया। टीम में चल रही गुटबाजियों के मसले अलग हैं। कोच, कैप्टन, खिलाड़ी किसी के भी विचार आपस में नहीं मिल रहे। सभी खुद को बचाने के लिए दूसरे में खोट निकाल ही रहे है। आम जनता की सुनें तो वो कहती है कि आईपीएल में पैसा ज्यादा है तो प्रदर्शन भी बेहतर है। उच्च शिखर पर विराजमान होने के बाद अपेक्षाओं का ग्राफ भी उतना ही ऊंचा जाता है। इसलिए अब फर्श पर धाराशायी पड़ी टीम इंडिया को फिर से ऊंचाइयों पर आने के लिए कई तरह के समझौते करने होंगे। जिसमें सबसे बड़ा समझौता होगा अहम की टकराहट को रोकना ही नहीं खत्म कर देना। खेल को सुधारने से ज्यादा एफर्ट इस काम में लगेंगे। पाकिस्तान को ही देखिए धाराशायी होने के बाद अब शायद वह सोचने पर मजबूर है कि हिंदोस्तां से कश्मीर की लड़ाई का कोई हल खोजना जरूरी है। ..तो समझाइश कुछ इस तरह है कि अहम को मारने में उतना समय नहीं लगाएं कि हम खुद के अस्तित्व से ही खिलवाड़ कर बैठें।

हताश भाजपा में नहीं थम रहा गुटीय घमासान

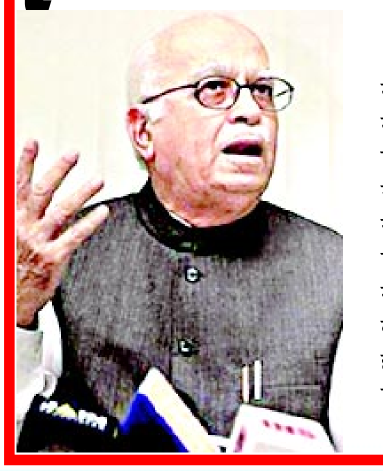

चुनावी पराजय से हताश भाजपा में गुटीय घमासान और जिम्मेदारी से भागते नेताओं की दौड़ थमने का नाम नहीं ले रही है. पार्टी में दो केन्द्र बन गये हैं, एक का नेतृत्व लालकृष्ण आडवाणी कर रहे हैं तो दूसरे के नेता राजनाथसिंह हैं. दोनों ही गुट एक दूसरे पर कीचड़ उछालने में पीछे नहीं है और इसी घमासान को दोनों खेमे पत्र युद्ध के जरिये लोगों के बीच ले जा रहे हैं. जसवंत सिंह, यशवंत सिन्हा, अरूण जेटली, अरूण शौरी और भुवन चंद खंडूरी, कोश्यारी सभी अपने-अपने तरीके से पीछे नहीं है. ऐसे में भाजपा अध्यक्ष राजनाथसिंह चौतरफा मुसीबत में है. हालांकि राष्ट्रीय कार्यकारिणी में उन्होंने हार की जिम्मेदारी लेकर अपने प्रतिद्वंद्वियों पर फिर नया वार किया है. मगर पार्टी का यह गुटीय घमासान थमेगा इसके आसार कम ही है. हालांकि इस संपूर्ण विवाद पर जिसमें चुनावी हार के कारणों का मुद्दा मुख्य रूप से शामिल है भाजपा की दो दिवसीय की बैठक में चर्चा शुरू हो गई है.

शेष अंतिम पेज पर .....